IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# चन्देरी : ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक एवं सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन

## CHANDERI: A STUDY OF HISTORICAL, ARCHAEOLOGICAL, AND CULTURAL HERITAGE

Manvendra Singh Yadav
Assistant Professor History
Government Mahakoshal College Jabalpur M.P.

**Abstract**

मध्यप्रदेश के अशोकनगर जिले में स्थित चन्देरी भारत के उन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नगरों में से एक है, जहाँ इतिहास, पुरातत्त्व, स्थापत्य, धर्म, कला, संस्कृति और परंपरागत वस्त्र उद्योग का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। विन्ध्याचल की पर्वत मालाओं से घिरा यह नगर प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ अपने दुर्गों, महलों, मंदिरों, मस्जिदों, मकबरों, बावड़ियों, शिलालेखों और मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है। चन्देरी का इतिहास प्रागैतिहासिक काल से प्रारंभ होकर प्राचीन, मध्यकालीन, औपनिवेशिक तथा आधुनिक काल तक विस्तृत है। इसके आसपास प्राप्त पाषाण उपकरण और शैलचित्र इस क्षेत्र में प्रागैतिहासिक मानव की उपस्थिति के संकेत देते हैं। प्राचीन साहित्यिक परंपराओं में इस क्षेत्र को चेदि राज्य से संबंधित माना गया है। कालांतर में परवर्ती प्रतिहार, दिल्ली सल्तनत, मालवा सल्तनत, मुगल, बुन्देला, ब्रिटिश और सिंधिया शासकों ने चन्देरी के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कीर्तिदुर्ग, बादल महल दरवाजा, कौशक महल, बत्तीसी बावड़ी, कटीघाटी, जामा मस्जिद, जैन मंदिर, जौहर स्मारक और विभिन्न धार्मिक एवं स्थापत्य अवशेष इसके समृद्ध अतीत के साक्षी हैं। चन्देरी की पहचान उसकी प्रसिद्ध हथकरघा परंपरा और चन्देरी वस्त्र से भी जुड़ी हुई है। प्रस्तुत शोध-पत्र में चन्देरी के ऐतिहासिक विकास, स्थापत्य कला, धार्मिक परंपराओं, जल प्रबंधन, सांस्कृतिक समन्वय और वस्त्र परंपरा का अध्ययन किया गया है।

Located in the Ashoknagar district of Madhya Pradesh, Chanderi is one of India's significant historical towns, offering a remarkable blend of history, archaeology, architecture, religion, art, culture, and a traditional textile industry. Nestled amidst the Vindhyachal mountain ranges, the town is renowned not only for its natural beauty but also for its forts, palaces, temples, mosques, mausoleums, stepwells, inscriptions, and sculptures. Chanderi's history spans from prehistoric times through the ancient, medieval, and colonial eras to the modern day; stone tools and rock paintings found in the vicinity indicate the presence of prehistoric humans in the region. Ancient literary traditions associate this area with the Kingdom of Chedi. Over time, the Pratihara dynasty, the Delhi Sultanate, the Malwa Sultanate, and rulers from the Mughal, Bundela, British, and Scindia dynasties played pivotal roles in Chanderi's political and cultural evolution. Landmarks such as Kirti Durg, Badal Mahal Darwaza, Koshak Mahal, Battisi Baoli, Kati Ghati, Jama Masjid, Jain temples, the Jauhar Memorial, and various other religious and architectural relics stand as witnesses to its rich past. Chanderi is also distinguished by its renowned handloom heritage and its signature textiles. This research paper examines Chanderi's historical development, architectural style, religious traditions, water management systems, cultural synthesis, and textile heritage.

**प्रमुख शब्द :** चन्देरी, कीर्तिदुर्ग, परवर्ती प्रतिहार, मालवा सल्तनत, बाबर, मेदिनीराय, जौहर, स्थापत्य कला, जैन विरासत, चन्देरी वस्त्र।

## परिचय Introduction

मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक नगरों में चन्देरी का एक विशिष्ट स्थान है। वर्तमान में यह अशोकनगर जिले में स्थित है। लगभग 24°42′ उत्तरी अक्षांश एवं 78°11′ पूर्वी देशांतर पर स्थित चन्देरी अशोकनगर जिला मुख्यालय से लगभग 65 किलोमीटर तथा उत्तर प्रदेश के ललितपुर से लगभग 37 किलोमीटर की दूरी पर है। विन्ध्याचल की पर्वत मालाओं से घिरे होने के कारण इसका प्राकृतिक परिवेश अत्यंत मनोरम है। भौगोलिक स्थिति ने चन्देरी को प्राकृतिक सौन्दर्य प्रदान करने के साथ-साथ प्राचीन और मध्यकाल में सामरिक महत्व भी प्रदान किया। पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग, नगर के प्रवेश द्वार और आसपास विकसित जल-संरचनाएँ इसकी सामरिक तथा नगरीय महत्ता को प्रमाणित करती हैं।

चन्देरी का महत्व केवल राजनीतिक इतिहास तक सीमित नहीं है। यहाँ विभिन्न कालखंडों में निर्मित मंदिर, जैन तीर्थ, मस्जिदें, मकबरे, दुर्ग, महल, बावड़ियाँ और तालाब भारतीय स्थापत्य परंपरा के विभिन्न चरणों को अभिव्यक्त करते हैं। हिन्दू, जैन और इस्लामी परंपराओं से संबंधित स्थापत्य अवशेषों का एक ही नगर में विद्यमान होना इसकी सांस्कृतिक बहुलता को प्रदर्शित करता है। इसके अतिरिक्त चन्देरी की हथकरघा और वस्त्र निर्माण परंपरा ने इसे आधुनिक काल में भी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान प्रदान की है। इस प्रकार चन्देरी का अध्ययन राजनीतिक इतिहास के साथ-साथ पुरातत्त्व, स्थापत्य, धर्म, संस्कृति, जल-प्रबंधन तथा आर्थिक इतिहास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

## चन्देरी का प्रागैतिहासिक एवं प्राचीन इतिहास

चन्देरी के गौरवशाली इतिहास की जड़ें प्रागैतिहासिक काल तक जाती हैं। नगर के आसपास के क्षेत्रों से प्राप्त पाषाण उपकरण और शैलचित्र यह संकेत देते हैं कि यह क्षेत्र प्रागैतिहासिक मानव की गतिविधियों का केंद्र रहा होगा। विन्ध्य क्षेत्र की प्राकृतिक गुफाएँ, पहाड़ियाँ और जल-स्रोत मानव निवास के लिए अनुकूल रहे होंगे। इस प्रकार चन्देरी का ऐतिहासिक महत्व मध्यकालीन दुर्ग और स्थापत्य निर्माण से बहुत पहले प्रारंभ हो चुका था।

चन्देरी के प्राचीन इतिहास को चेदि राज्य की परंपरा से भी जोड़ा जाता है। महाभारत में वर्णित चेदि राज्य और शिशुपाल की कथा के साथ इस क्षेत्र की पहचान स्थानीय ऐतिहासिक परंपराओं में स्थापित है। शिशुपाल को चेदि नरेश दमघोष का पुत्र तथा भगवान श्रीकृष्ण का फुफेरा भाई माना गया है। जैन साहित्य में भी इस क्षेत्र से संबंधित उल्लेख प्राप्त होते हैं। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के सोलह महाजनपदों में चेदि महाजनपद का महत्वपूर्ण स्थान था। स्थानीय एवं पुरातात्त्विक परंपरा में बूढ़ी चन्देरी को प्राचीन चेदि क्षेत्र से संबंधित माना गया है। वर्तमान चन्देरी से लगभग बीस किलोमीटर दूर स्थित बूढ़ी चन्देरी पुरातात्त्विक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ बड़ी संख्या में जैन मंदिरों के अधिष्ठान और पुरावशेष प्राप्त हुए हैं, जिन्हें लगभग नौवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य का माना जाता है। यहाँ से प्राप्त मंदिरों के स्थापत्य खंड, शिलालेख और मूर्तियों के अनेक अवशेषों को चन्देरी के पुरातत्व संग्रहालय में संरक्षित किया गया है। वर्तमान में बूढ़ी चन्देरी में जैन मंदिरों तथा एक प्राचीन गढ़ी के अवशेष भी विद्यमान हैं। इस गढ़ी को स्थानीय जनमानस में शिशुपाल की गढ़ी के नाम से जाना जाता है। इसकी द्वार शाखा पर गंगा और यमुना नदी देवियों का अंकन इसे तत्कालीन मंदिर स्थापत्य परंपरा से जोड़ता है।

## परवर्ती प्रतिहार काल में चन्देरी का विकास

चन्देरी के इतिहास में परवर्ती प्रतिहार काल अत्यंत महत्वपूर्ण है। उपलब्ध शिलालेखीय साक्ष्यों के आधार पर वर्तमान चन्देरी के व्यवस्थित विकास को शासक कीर्तिपाल से संबंधित माना जाता है। जैत्रवर्मन के शिलालेख से प्राप्त जानकारी के अनुसार कीर्तिपाल ने लगभग ग्यारहवीं शताब्दी में कीर्तिदुर्ग, कीर्तिसागर तथा कीर्तिनारायण मंदिर का निर्माण कराया था। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि वर्तमान चन्देरी को एक व्यवस्थित राजनीतिक एवं सामरिक केंद्र के रूप में विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य कीर्तिपाल के समय हुआ। कीर्तिदुर्ग चन्द्रगिरि पहाड़ी के उच्च भाग पर निर्मित है और चन्देरी के लगभग प्रत्येक भाग से दिखाई देता है। पहाड़ी के शिखर पर इसकी स्थिति तत्कालीन शासकों की सामरिक दृष्टि को प्रदर्शित करती है। दुर्ग के साथ कीर्तिसागर जैसी जल-संरचना और कीर्तिनारायण जैसे धार्मिक स्थल का निर्माण यह दर्शाता है कि नगर की स्थापना में केवल सैनिक आवश्यकताओं को ही महत्व नहीं दिया गया, बल्कि धार्मिक और नागरिक आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा गया था। इस प्रकार प्रतिहार काल में चन्देरी एक दुर्गीकृत नगरीय केंद्र के रूप में विकसित हुआ।

## सल्तनत एवं मालवा के सुल्तानों के अधीन चन्देरी

परवर्ती प्रतिहार शासन के बाद चन्देरी के राजनीतिक इतिहास में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। उपलब्ध शिलालेखीय सामग्री से ज्ञात होता है कि चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभ में चन्देरी दिल्ली सल्तनत के प्रभाव क्षेत्र में आ गई थी। इसके पश्चात् दिल्ली सल्तनत की शक्ति कमजोर होने पर मालवा में स्वतंत्र सत्ता का उदय हुआ और चन्देरी भी मालवा की राजनीतिक व्यवस्था का हिस्सा बन गई। दिलावर खाँ गोरी और उसके उत्तराधिकारियों के समय चन्देरी की सामरिक महत्ता बनी रही।

पंद्रहवीं शताब्दी में मालवा के सुल्तानों के संरक्षण में चन्देरी में स्थापत्य निर्माण की उल्लेखनीय गतिविधियाँ हुईं। इस काल में निर्मित बावड़ियाँ, मस्जिदें, नगर द्वार, मकबरे और महल चन्देरी की स्थापत्य विरासत के महत्वपूर्ण अंग हैं। काजी बावड़ी, बत्तीसी बावड़ी, ईदगाह, गणपति दरवाजा अथवा कटीघाटी, कौशक महल और अन्य जल-संरचनाएँ इस काल की स्थापत्य और अभियंत्रण क्षमता को प्रदर्शित करती हैं। चन्देरी से प्राप्त अनेक फारसी शिलालेख मालवा के सुल्तानों के शासन तथा तत्कालीन अधिकारियों और निर्माण गतिविधियों की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। चन्देरी के दिल्ली दरवाजे पर अंकित फारसी शिलालेख भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। इसमें हिजरी 814 अर्थात् 1411 ई. की तिथि प्राप्त होती है। यह शिलालेख न केवल तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों की जानकारी देता है, बल्कि चन्देरी में फारसी भाषा और इस्लामी अभिलेखीय परंपरा के विकास को भी दर्शाता है।

## बाबर, मेदिनीराय और चन्देरी का युद्ध

चन्देरी के राजनीतिक इतिहास में 1528 ई. का वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है। लोदी सत्ता के पतन और उत्तर भारत में मुगल शक्ति के उदय के समय चन्देरी मेदिनीराय के अधिकार में थी। मेदिनीराय तत्कालीन मध्यभारत की राजनीति में महत्वपूर्ण शक्ति थे। बाबर द्वारा उत्तर भारत में अपनी सत्ता को सुदृढ़ करने के प्रयासों के क्रम में चन्देरी पर आक्रमण किया गया। जनवरी 1528 ई. में बाबर और मेदिनीराय के मध्य संघर्ष हुआ, जिसमें चन्देरी पर मुगल अधिकार स्थापित हुआ।

चन्देरी की स्थानीय ऐतिहासिक स्मृति में यह युद्ध शौर्य, बलिदान और जौहर की घटना के कारण विशेष महत्व रखता है। मेदिनीराय की पराजय के पश्चात् महारानी मणिमाला और राजपूत वीरांगनाओं द्वारा जौहर किए जाने की परंपरा स्थानीय इतिहास में अत्यंत प्रसिद्ध है। कीर्तिदुर्ग परिसर में निर्मित जौहर स्मारक इसी स्मृति को जीवित रखता है। उपलब्ध सामग्री के अनुसार वर्तमान जौहर स्मारक का निर्माण बाद में सिंधिया राज्य द्वारा कराया गया था और इसे 28 जनवरी 1528 ई. के युद्ध तथा जौहर की स्मृति से जोड़ा जाता है।

ऐतिहासिक शोध की दृष्टि से इस प्रसंग का अध्ययन करते समय समकालीन राजनीतिक विवरण, अभिलेखीय साक्ष्य और स्थानीय लोक-स्मृति को अलग-अलग स्तरों पर समझना आवश्यक है। युद्ध का राजनीतिक इतिहास और उसके साथ विकसित जौहर संबंधी सांस्कृतिक स्मृति दोनों चन्देरी की वर्तमान ऐतिहासिक पहचान के महत्वपूर्ण घटक हैं।

## मुगल एवं बुन्देला काल

मुगल काल में भी चन्देरी का राजनीतिक महत्व बना रहा। सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में जहाँगीर ने ओरछा के बुन्देला शासक रामशाह को चन्देरी से संबद्ध किया। इसके पश्चात् चन्देरी में बुन्देला प्रभाव बढ़ा। उपलब्ध विवरण के अनुसार रामशाह ने खंडहर अवस्था में पड़े कीर्तिदुर्ग का जीर्णोद्धार कराया। बाद के बुन्देला शासकों ने भी दुर्ग परिसर और नगर में विभिन्न निर्माण कार्य करवाए। इस कारण आज कीर्तिदुर्ग के स्थापत्य में बुन्देला शैली के तत्व भी स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। नगर के मध्य स्थित बुन्देला राजमहल, जिसे वर्तमान में राजारानी महल के नाम से जाना जाता है, इस काल की महत्वपूर्ण संरचना है। महल में राजपरिवार के निवास और राजकीय कार्यों के लिए पृथक व्यवस्था दिखाई देती है। इसके साथ एक विशेष स्नानागार तथा प्राचीन बावड़ी भी है। इसकी स्थापत्य योजना में बुन्देला राजमहलों की विशेषताएँ दिखाई देती हैं और इसकी तुलना ओरछा की स्थापत्य परंपरा से की जा सकती है।

## चन्देरी की स्थापत्य विरासत

चन्देरी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में उसकी स्थापत्य विविधता है। यहाँ के स्मारकों में विभिन्न राजनीतिक और धार्मिक परंपराओं का प्रभाव दिखाई देता है। कीर्तिदुर्ग जहाँ राजपूत और बुन्देला सामरिक स्थापत्य का उदाहरण प्रस्तुत करता है, वहीं बादल महल दरवाजा, जामा मस्जिद, कौशक महल और विभिन्न मकबरे मालवा सल्तनत की स्थापत्य परंपरा को अभिव्यक्त करते हैं।

**बादल महल** दरवाजा आज चन्देरी की स्थापत्य पहचान का प्रतीक बन चुका है। जमीन से लगभग पचास फीट ऊँची इस संरचना की मेहराबें, पत्थर की जालियाँ और ऊँची मीनारनुमा संरचनाएँ इसे विशिष्ट बनाती हैं। इसकी स्थापत्य शैली में इस्लामी मेहराब और भारतीय तोरण परंपरा के तत्वों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। यही कारण है कि बादल महल दरवाजा चन्देरी की सांस्कृतिक पहचान के प्रमुख प्रतीकों में सम्मिलित हो चुका है।

**कौशक महल** चन्देरी की मध्यकालीन स्थापत्य कला का एक अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसे मालवा के सुल्तान महमूदशाह खिलजी की विजय से संबंधित माना जाता है। इसे सात मंजिला संरचना के रूप में विकसित करने की योजना थी, परंतु वर्तमान में इसकी तीन मंजिलें पूर्ण तथा चौथी अपूर्ण अवस्था में दिखाई देती है। स्थानीय हल्के भूरे बलुआ पत्थर से निर्मित इस महल की मेहराबें, बालकनियाँ, खिड़कियाँ और सजावटी तत्व तत्कालीन स्थापत्य कला की उच्च अवस्था को प्रदर्शित करते हैं। यहाँ प्राप्त फारसी लेख प्रशासनिक अधिकारियों और निर्माण प्रक्रिया के संबंध में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक संकेत प्रदान करते हैं।

## जल स्थापत्य एवं बावड़ियों की परंपरा

चन्देरी की ऐतिहासिक संरचना में जल-प्रबंधन का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था। पहाड़ी भू-भाग में स्थित होने के बावजूद यहाँ अनेक तालाबों, बावड़ियों और अन्य जल-स्रोतों का निर्माण किया गया। इससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन शासक जल संरक्षण और नगर की जलापूर्ति के प्रति सजग थे। बत्तीसी बावड़ी इस जल स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह बहुमंजिला बावड़ी है और इसमें विभिन्न तलों पर कुल बत्तीस घाट बनाए गए हैं, जिसके कारण इसे बत्तीसी बावड़ी कहा जाता है। इसकी संरचना तत्कालीन अभियंत्रण क्षमता का परिचय देती है। यहाँ से प्राप्त फारसी शिलालेख मालवा के सुल्तान गियासुद्दीन के काल से संबंधित हैं। इन अभिलेखों के कारण यह बावड़ी केवल स्थापत्य और जल-प्रबंधन का उदाहरण नहीं रहती, बल्कि मालवा सल्तनत के इतिहास का महत्वपूर्ण अभिलेखीय स्रोत भी बन जाती है। बत्तीसी बावड़ी के अतिरिक्त चन्देरी में काजी बावड़ी, चकला बावड़ी, जनाजन बावड़ी, अर्जुन बावड़ी, आलिया बावड़ी, झलार बावड़ी, चँदई बावड़ी, राजमती बावड़ी और अनेक अन्य जल-संरचनाओं के अवशेष मिलते हैं। इतनी बड़ी संख्या में बावड़ियों और तालाबों की उपस्थिति चन्देरी की विकसित नगरीय जल-व्यवस्था को प्रमाणित करती है।

## धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत

चन्देरी की सांस्कृतिक विशेषता उसकी बहुधार्मिक विरासत है। नगर में हिन्दू, जैन और इस्लामी धर्म से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण स्मारक एक ही सांस्कृतिक भू-दृश्य में विद्यमान हैं। श्री जागेश्वरी देवी मंदिर चन्देरी की महत्वपूर्ण हिन्दू धार्मिक परंपराओं में से एक है। मंदिर की उत्पत्ति के साथ राजा कीर्तिपाल और देवी के प्रकट होने की एक स्थानीय धार्मिक कथा जुड़ी हुई है। यह कथा इतिहास के साथ-साथ चन्देरी की जीवित लोक-स्मृति का महत्वपूर्ण उदाहरण है। जैन धर्म की दृष्टि से चन्देरी का महत्व विशेष है। बूढ़ी चन्देरी के जैन मंदिर अवशेष, दिगम्बर जैन चौबीसी बड़ा मंदिर और खन्दारगिरि जैन क्षेत्र यहाँ जैन धर्म की दीर्घकालिक उपस्थिति को प्रमाणित करते हैं। चौबीसी मंदिर में चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ स्थापित हैं। विभिन्न वर्णों में निर्मित इन विशाल पद्मासन प्रतिमाओं के कारण यह मंदिर विशेष धार्मिक और कलात्मक महत्व रखता है। खन्दारगिरि क्षेत्र में गुफाओं, प्रतिमाओं और विभिन्न कालों में निर्मित मंदिरों की उपस्थिति चन्देरी क्षेत्र में जैन धार्मिक गतिविधियों की निरंतरता को दर्शाती है। इस्लामी स्थापत्य में जामा मस्जिद, खिलजी मस्जिद, निजामुद्दीन खानदान का मकबरा, शहजादी का रौजा और विभिन्न सूफी मकबरे उल्लेखनीय हैं। जामा मस्जिद में विशाल प्रांगण, मेहराबदार दालान, गुम्बद तथा सजावटी नक्काशी तत्कालीन स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। चन्देरी के विभिन्न इस्लामी स्मारकों पर प्राप्त फारसी शिलालेख इनके निर्माण काल और तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के अध्ययन में महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

## कटीघाटी : स्थापत्य एवं सांस्कृतिक समन्वय

चन्देरी नगर के दक्षिण में स्थित कटीघाटी मध्यकालीन अभियंत्रण कला का अद्वितीय उदाहरण है। एक विशाल पहाड़ी को काटकर बनाए गए इस मार्ग का निर्माण अत्यधिक श्रम और तकनीकी दक्षता की मांग करता था। इसके पूर्वी भाग में फारसी और देवनागरी लिपि के शिलालेख अंकित हैं। उपलब्ध विवरण के अनुसार संस्कृत-नागरी अभिलेख और फारसी अभिलेख इसके निर्माण को पंद्रहवीं शताब्दी के अंतिम दशक से जोड़ते हैं।

इस स्थल की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि फारसी अभिलेख में इस दरवाजे को हिन्दू देवता गणपति के नाम से संबोधित किए जाने का उल्लेख मिलता है। यदि इसे तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में देखा जाए तो यह चन्देरी में स्थानीय और इस्लामी सांस्कृतिक परंपराओं के परस्पर संपर्क का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।

## चन्देरी पुरातत्व संग्रहालय

चन्देरी की ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक धरोहर के संरक्षण में चन्देरी पुरातत्व संग्रहालय का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ बूढ़ी चन्देरी, थूबोन तथा आसपास के क्षेत्रों से प्राप्त जैन, वैष्णव और शैव परंपरा की प्रतिमाएँ, मंदिर वास्तु-खंड, शिलालेख, मानचित्र तथा अन्य पुरावशेष संरक्षित और प्रदर्शित किए गए हैं। संग्रहालय की स्थापना 14 सितम्बर 2008 को की गई थी।

संग्रहालय में संरक्षित सामग्री चन्देरी के इतिहास को केवल साहित्यिक विवरणों के माध्यम से नहीं बल्कि भौतिक पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर समझने का अवसर प्रदान करती है। इसलिए चन्देरी के व्यवस्थित इतिहास लेखन में संग्रहालय की सामग्री और क्षेत्रीय पुरातात्त्विक सर्वेक्षण का विशेष महत्व है।

## औपनिवेशिक काल और सिंधिया शासन

उन्नीसवीं शताब्दी में चन्देरी की राजनीतिक परिस्थितियों में पुनः परिवर्तन हुआ। उपलब्ध विवरण के अनुसार 1844 ई. में चन्देरी ब्रिटिश नियंत्रण में आ गई। 1857 के विद्रोह के दौरान राजा मर्दनसिंह ने कुछ समय के लिए यहाँ अपना अधिकार स्थापित किया, लेकिन 1858 में ब्रिटिश सेना ने पुनः चन्देरी पर अधिकार कर लिया। इसके बाद 1861 की एक संधि के अंतर्गत चन्देरी ग्वालियर राज्य को सौंप दी गई और स्वतंत्रता प्राप्ति तक यह सिंधिया शासन के अधीन रही।
राजनीतिक सत्ता में इन परिवर्तनों के बावजूद चन्देरी की स्थानीय कला, शिल्प और सांस्कृतिक परंपराएँ जीवित रहीं। यही सांस्कृतिक निरंतरता आधुनिक चन्देरी की पहचान का आधार बनी।

## चन्देरी वस्त्र एवं हथकरघा परंपरा

चन्देरी की ऐतिहासिक पहचान जितनी उसके स्मारकों से जुड़ी है, उतनी ही उसकी प्रसिद्ध वस्त्र निर्माण परंपरा से भी जुड़ी हुई है। चन्देरी वस्त्र अपनी महीन बुनाई, हल्केपन और कलात्मक स्वरूप के कारण देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं। परंपरागत हथकरघा उद्योग ने स्थानीय अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। इस उद्योग में पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित बुनाई कौशल चन्देरी की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। आधुनिक काल में इस परंपरा के संरक्षण और विकास के लिए चन्देरी में हैंडलूम पार्क स्थापित किया गया। उपलब्ध विवरण के अनुसार इसका लोकार्पण 27 अगस्त 2017 को किया गया और इसमें 24 वर्क स्टेशनों में 240 आधुनिक लूम स्थापित किए गए। यहाँ चन्देरी वस्त्र निर्माण की प्रक्रिया का प्रत्यक्ष अवलोकन किया जा सकता है।
इस दृष्टि से चन्देरी एक ऐसा विरासत नगर है जहाँ मूर्त सांस्कृतिक विरासत और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। किले, मंदिर, मस्जिद, बावड़ियाँ और महल जहाँ इसके ऐतिहासिक अतीत का प्रतिनिधित्व करते हैं, वहीं हथकरघा और वस्त्र निर्माण परंपरा उस अतीत को वर्तमान सामाजिक-आर्थिक जीवन से जोड़ती है।

## चन्देरी की ऐतिहासिक विरासत का महत्व

चन्देरी के समग्र इतिहास का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि इसकी ऐतिहासिक पहचान किसी एक राजवंश, धर्म अथवा राजनीतिक घटना से निर्मित नहीं हुई। विभिन्न कालों और संस्कृतियों ने चन्देरी को अलग-अलग रूपों में प्रभावित किया और प्रत्येक काल ने नगर की सांस्कृतिक संरचना में कुछ नया जोड़ा। प्रागैतिहासिक मानव की गतिविधियों से लेकर प्राचीन धार्मिक परंपराओं, परवर्ती प्रतिहारों की नगरीय संरचना, मालवा सल्तनत की स्थापत्य गतिविधियों, मुगल राजनीतिक विस्तार, बुन्देला राजकीय संस्कृति तथा सिंधिया काल तक चन्देरी का इतिहास निरंतर परिवर्तन और सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया को अभिव्यक्त करता है। विशेष रूप से यहाँ की स्थापत्य कला इस सांस्कृतिक समन्वय की सशक्त अभिव्यक्ति है। स्थानीय भारतीय स्थापत्य तत्वों का इस्लामी मेहराबों और गुम्बदों के साथ प्रयोग, फारसी और देवनागरी दोनों लिपियों में अभिलेखों की उपलब्धता तथा हिन्दू, जैन और इस्लामी धार्मिक स्मारकों का एक ही नगर में विद्यमान होना चन्देरी के बहुलतावादी सांस्कृतिक चरित्र को प्रमाणित करता है।
चन्देरी की बावड़ियाँ और तालाब तत्कालीन समाज के तकनीकी ज्ञान और पर्यावरणीय समझ को भी प्रदर्शित करते हैं। आधुनिक समय में जब जल-संरक्षण एक गंभीर चुनौती बन चुका है, चन्देरी की ऐतिहासिक जल-व्यवस्था का अध्ययन परंपरागत जल प्रबंधन प्रणालियों को समझने की दृष्टि से विशेष उपयोगी हो सकता है।

## विरासत संरक्षण और वर्तमान चुनौतियाँ

चन्देरी में बड़ी संख्या में ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक स्मारकों की उपस्थिति इसे एक महत्वपूर्ण विरासत नगर बनाती है। किंतु इतने व्यापक सांस्कृतिक परिदृश्य का संरक्षण चुनौतीपूर्ण भी है। प्राचीन स्मारकों का प्राकृतिक क्षरण, बावड़ियों और तालाबों की जीर्ण अवस्था, पुरातात्त्विक अवशेषों का संरक्षण, आधुनिक निर्माण का दबाव तथा पर्यटन के विस्तार के कारण उत्पन्न समस्याएँ भविष्य में विशेष ध्यान की मांग करती हैं।
संरक्षण का उद्देश्य केवल बड़े और प्रसिद्ध स्मारकों तक सीमित नहीं होना चाहिए। नगर की छोटी बावड़ियाँ, मंदिर अवशेष, छतरियाँ, पुराने दरवाजे, शिलालेख, प्राकृतिक स्थल तथा परंपरागत बुनकर बस्तियाँ भी चन्देरी के समग्र सांस्कृतिक इतिहास का हिस्सा हैं। इसलिए चन्देरी के संरक्षण के लिए ऐसी समग्र नीति आवश्यक है जिसमें पुरातात्त्विक संरक्षण, स्थानीय समुदाय की सहभागिता, पारंपरिक शिल्प का संरक्षण, पर्यावरणीय संतुलन और सतत पर्यटन को एक साथ महत्व दिया जाए।

## निष्कर्ष

चन्देरी मध्यभारत के इतिहास और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। इसका इतिहास प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक विस्तृत एक दीर्घ ऐतिहासिक यात्रा प्रस्तुत करता है। क्षेत्र में प्राप्त पाषाण उपकरणों और शैलचित्रों से प्रारंभ होने वाली इसकी ऐतिहासिक परंपरा प्राचीन चेदि की स्मृतियों, बूढ़ी चन्देरी के पुरातात्त्विक अवशेषों, परवर्ती प्रतिहार शासन, दिल्ली और मालवा सल्तनत, मुगल सत्ता, बुन्देला शासन, ब्रिटिश हस्तक्षेप तथा सिंधिया राज्य से होकर आधुनिक भारत तक पहुँचती है। चन्देरी के इतिहास की सबसे बड़ी विशेषता उसकी निरंतरता और विविधता है। कीर्तिदुर्ग राजनीतिक और सामरिक इतिहास की गवाही देता है तो बत्तीसी बावड़ी तत्कालीन जल-प्रबंधन और अभियंत्रण कौशल को प्रदर्शित करती है। बादल महल दरवाजा और कौशक महल मध्यकालीन स्थापत्य कला की उत्कृष्टता को अभिव्यक्त करते हैं। जैन मंदिर और खन्दारगिरि जैन धार्मिक परंपरा की दीर्घकालिक उपस्थिति को प्रमाणित करते हैं, जबकि जामा मस्जिद, मकबरे और अन्य इस्लामी संरचनाएँ नगर के बहुधार्मिक सांस्कृतिक स्वरूप को सामने लाती हैं। इसी प्रकार जौहर स्मारक चन्देरी की ऐतिहासिक स्मृति में शौर्य और बलिदान के आख्यान को जीवित रखता है।

चन्देरी की विशेषता यह भी है कि यहाँ इतिहास केवल अतीत के खंडहरों में सुरक्षित नहीं है। इसकी हथकरघा और वस्त्र निर्माण परंपरा आज भी जीवित है। चन्देरी वस्त्र स्थानीय कारीगरों के परंपरागत ज्ञान और कौशल को वर्तमान से जोड़ता है। इस प्रकार चन्देरी में मूर्त विरासत और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का दुर्लभ समन्वय दिखाई देता है। अतः चन्देरी को केवल एक ऐतिहासिक नगर अथवा पर्यटन स्थल के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। इसे एक समग्र सांस्कृतिक परिदृश्य के रूप में समझने की आवश्यकता है, जहाँ प्राकृतिक पर्यावरण, राजनीतिक इतिहास, पुरातात्त्विक अवशेष, धार्मिक परंपराएँ, स्थापत्य कला, जल-संरचनाएँ और जीवित हस्तशिल्प संस्कृति एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। इन सभी तत्वों के समन्वित संरक्षण द्वारा ही चन्देरी की बहुमूल्य विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है।

## संदर्भ -


1. चन्देरी के इतिहास, पुरातत्त्व, स्थापत्य स्मारकों, शिलालेखों, धार्मिक स्थलों, बावड़ियों, प्राकृतिक स्थलों तथा हथकरघा उद्योग से संबंधित प्रस्तुत आधार सामग्री।
2. चन्देरी पुरातत्व संग्रहालय में संरक्षित शिलालेख, मूर्तियाँ एवं स्थापत्य अवशेष।
3. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित चन्देरी के ऐतिहासिक स्मारकों से संबंधित सामग्री।
4. मध्यप्रदेश राज्य पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय विभाग से संबंधित चन्देरी की पुरातात्त्विक सामग्री।
5. चन्देरी के स्थानीय ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं से संबंधित उपलब्ध साहित्य।